शिक्षा संस्कार योजना (औपचारिक कार्यक्रम)

छत्तीसगढ़ में मूल्य–शिक्षा कार्यक्रम

मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद का उद्भव अमरकंटक, मध्य प्रदेश में हुआ था। इसके निकटतम राज्य छत्तीसगढ़ में अनौपचारिक रूप से इसके लोकव्यापीकरण का कार्य रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, बस्तर, औवरी आदि क्षेत्रों में हुआ। जीवन विद्या परिचय शिविरों का प्रारंभ सन् 1986 में हुआ था, जिसमें कई गैर–सरकारी संस्थाएं एवं धार्मिक, आध्यात्मिक संस्थाओं के सदस्यों ने भाग लिया। सन् 1999 में अभ्युदय संस्थान की शुरुआत कुछ परिवारों के सामूहिक प्रयास से हुई, लेकिन औपचारिक विद्यालयी स्तर पर राज्य सरकार ने स्कूल शिक्षा विभाग और राज्यशैक्षिक अनुसंधान परिवार छत्तीसगढ़ में विधिवत कार्यक्रम की शुरुआत सन् 2007 में हुई, जिसमें छत्तीसगढ़ राज्य के समस्त विद्यालयी शिक्षक, व्याख्याता शिक्षक, प्राचार्य, संकुल समन्वयक को एडूसेट से पांच दिवसीय, सात दिवसीय, एक दिवसीय एवं दस दिवसीय परिचय शिविर कराए गए। इसमें कुल 15,525 प्रतिभागी लाभान्वित हुए, जिसमें दस दिवसीय प्राचार्य शिविरों में 1025 प्राचार्यों ने इस शिविर में भाग लिया। एडूसेट के द्वारा 1600 विद्यार्थियों का भी शिविर लगाया गया, जिससे इस मध्यस्थ दर्शन आधारित शिविर के प्रभाव को संपूर्ण शिक्षा–व्यवस्था पर व्यापकता के आधार पर आवश्यकता का आकलन किया जा सके। इसके सभी आंकड़ों को तालिका क्रमांक 19 में दर्शाया गया है। इसी तरह सात दिवसीय आवासीय परिचय का 149 परिचय शिविरों का आयोजन अभ्युदय संस्थान में किया गया, जिसमें 11,545 आई.ए.एस.ई.सी.टी.ई. एस.सी.ई.आर.टी. साक्षरता मिशन के अधिकारी, शिक्षक एवं छात्राध्यापक लाभान्वित हुए। हजारों से अधिक शिक्षकों की एक सप्ताह के शिविरों में भागीदारी को सुनिश्चित कर शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया गया। इसी क्रम में कुछ चुने हुए शिक्षकों के अध्ययन शिविरों का आयोजन किया गया। 6 माह के अध्ययन शिविर के प्रथम चरण में 51 शिक्षक गुजर चुके हैं। एक वर्षीय अध्ययन शिविर से 150 शिक्षक एवं एक माह के अध्ययन शिविर से 39 शिक्षक लाभान्वित हुए हैं। इस तरह कुल 28,910 शिक्षक एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर से लाभान्वित हो चुके हैं, जिसमें मानवीय शिक्षा शोध संस्थान, अभ्युदय संस्थान, अछोटी, जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़ में दीर्घकालीन अध्ययन आवासीय शिविरों का आयोजन किया गया। इसी क्रम में कुछ परिवारों ने आपसी सहमति के आधार पर अभिभावक विद्यालय की स्थापना सन् 2011 में की। इनकी गतिविधि का विवरण निम्नानुसार है–

1. ''राज्य शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद, रायपुर छत्तीसगढ़ में मूल्य–शिक्षा'' छत्तीसगढ़ राज्य में मुख्यमंत्री श्री रमन सिंह और मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद के बीच 6 नवंबर, 2007 को हुई बैठक में यह तय किया गया कि इसे छत्तीसगढ़ की विद्यालयी शिक्षा और उच्च शिक्षा

में प्रस्थापित किया जाए। इस बैठक में तत्कालीन स्कूल शिक्षा सचिव श्री नंदकुमार और हिंदुस्तान समाचार के श्री रमाशंकर अग्निहोत्री एवं अभ्युदय संस्थान के सदस्य आदि उपस्थित थे। इस चर्चा के मुख्य बिंदु निम्नानुसार हैं– शिक्षा का मानवीयकरण–ए. नागराज जी द्वारा प्रतिपादित मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद) से निःसृत 'मानवीय शिक्षा' (कक्षा एक से स्नातकोत्तर तक) को छत्तीसगढ़ राज्य में लागू करना था।

मानव चेतना विकास मूल्य–शिक्षा को–

(अ) स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा में मानव चेतना विकास मूल्य–शिक्षा का समावेश।

(ब) राज्य लोकसेवा आयोग के नवचयनित प्रशिक्षुओं व अन्य सभी प्रशासनिक अधिकारियों को राज्य के समग्र विकास की दृष्टि से मानव चेतना विकास मूल्य–शिक्षा से अवगत कराना। इसमें मुख्यमंत्री श्री रमन सिंह जी ने उपरोक्त आशय की पूर्ति हेतु राज्य–शक्ति के नियोजन का पूर्ण आश्वासन दिया एवं इस हेतु राज्यस्तरीय अध्ययन प्रकोष्ठ की स्थापना का दायित्व तत्कालीन सचिव स्कूली शिक्षा, श्री नंदकुमार जी को सौंपा। मानवीय शिक्षा–नीति का प्रस्ताव दिनांक 07.11.2007 अभ्युदय संस्थान, अछोटी में तैयार किया गया। प्रस्तावित कार्य योजना के तहत मध्यस्थ दर्शन आधारित मूल्य–शिक्षा के माध्यम से छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु प्रयास किए गए, जिसके लिए मूल्य–शिक्षा अध्यापन–कार्य हेतु शिक्षकों को तैयार करने के लिए एस.सी.ई.आर.टी, डाइट के शिक्षकों, अधिकारियों, कार्यकर्ताओं के लिए 6 माह एवं एक वर्षीय अध्ययन शिविर का आयोजन किया गया और किया जा रहा है। ऐसे अनेक शिविरों के आयोजन कर उन्हें अध्यापन करने योग्य तैयार करने का शिक्षण–प्रशिक्षण किया गया।

''चेतना विकास मूल्य–शिक्षा संबंधित की गई गतिविधियां एवं अपेक्षा मानव स्वयं में समाधानपूर्वक, परिवार में समृद्धिपूर्वक, समाज में भयमुक्त व प्रकृति के साथ तालमेलपूर्वक जीने की योग्यता से संपन्न हो सकें, इसी उद्देश्य से एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा स्कूली शिक्षा में मानवीय मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने हेतु नवंबर, 2007 से चेतना विकास मूल्य–शिक्षा प्रारंभ की गई। इसकी प्रभावशीलता को देखते हुए छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग, आदेश क्रमांक 13–33/20–दो/2010 रायपुर, दिनांक 31.05.2010 के द्वारा चेतना विकास मूल्य–शिक्षा के स्थायित्व एवं निरंतरता हेतु 12 बिंदु का महत्वपूर्ण आदेश प्रसारित किया गया। शासन की मंशानुरूप चेतना विकास मूल्य–शिक्षा के अंतर्गत इसके राज्य स्रोत केंद्र मानवीय शिक्षा शोध संस्थान, अछोटी, जिला दुर्ग के सहयोग से रायपुर द्वारा अब तक निम्नांकित गतिविधियां संपन्न की गई है।

1. चेतना विकास मूल्य–शिक्षा आधारित जीवन विद्या पर राज्य एवं जिला स्तर के अधिकारियों, शिक्षकों, छात्राध्यापकों, छात्रों एवं समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों हेतु सात दिवसीय परिचय शिविर (प्रत्यक्ष एवं एडूसेट के माध्यम से) का आयोजन कराया गया।
2. चेतना विकास मूल्य–शिक्षा आधारित 14 वांग्मय पर शिक्षकों का एक वर्षीय अध्ययन शिविर (प्रत्यक्ष शिविर) का आयोजन कराया गया।
3. चेतना विकास मूल्य–शिक्षा की कक्षा 1 से 5 तक की पुस्तकों का क्षेत्र–परीक्षण राज्य के दो जिले दुर्ग एवं महासमुंद के 30 विद्यालयों में किया गया, जिसका फीडबैक विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं समाज के लोगों द्वारा अत्यधिक सकारात्मक रहा।
4. शालाओं के प्रथम कालखण्ड में सामान्य मुद्दे के अंतर्गत कक्षा 1 से 8 तक के विद्यार्थियों को चेतना विकास मूल्य–शिक्षा के ''भाग 1 से 5 तक के पुस्तकों का अध्यापन कराने हेतु इसकी उपलब्धता सुनिश्चित करना।
5. परिषद द्वारा चलाए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिभागियों को चेतना विकास मूल्य–शिक्षा के विभिन्न मुदद्ों के बारे में जानकारी देना।
6. परिषद द्वारा चेतना विकास मूल्य–शिक्षा की प्रभावशीलता पर शोध–कार्य करना। यह सभी कुछ व्यवस्थित रूप से राज्य में लागू किया गया, जिसमें हजारों शिक्षकों को इसके विधिवत सात दिवसीय प्रशिक्षण से गुजारने का कार्य हुआ। राज्य सरकार ने समय–समय पर इसका मूल्यांकन कर इसे प्रभावशाली एवं उपयोगी पाया।

उपरोक्त गतिविधियों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है–

1. परिचय शिविर– इसका उद्देश्य शैक्षिक अधिकारियों, शिक्षकों, छात्राध्यापकों एवं छात्रों में मानवीय मूल्यों का विकास करना है, ताकि स्कूली शिक्षा से ही मानवीय मूल्यों को प्रोन्नत किया जा सके और भावी पीढ़ी 20 वर्ष की शिक्षा के बाद उत्सवपूर्वक जी सके। नवंबर, 2007 से अब तक एडूसेट एवं प्रत्यक्ष शिविर के माध्यम से लगभग 23,000 प्रतिभागी प्रशिक्षित हो चुके हैं, जिसमें सभी प्रतिभागियों ने इसे स्वयं के लिए उपयोगी बताते हुए पाठ्यक्रम में शामिल करने का सुझाव दिया है। वर्ष 2007 से 2016 तक हुए परिचय शिविर की संख्यात्मक जानकारी तालिका क्रमांक 15 में दी गई है।
2. अध्ययन शिविर– शिक्षकों का अध्ययन शिविर मानवीय शिक्षा शोध संस्थान अभ्युदय संस्थान, अछोटी, जिला दुर्ग में आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य स्कूल शिक्षा विभाग से ही चेतना विकास मूल्य–शिक्षा पर प्रबोधक तैयार करना है, ताकि मानवीय मूल्यों की शिक्षा का व्यापक प्रसार हो सके। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अध्ययन शिविर का पहला बैच फरवरी, 2008 में 22 शिक्षकों के साथ 1 माह के लिए आयोजित हुआ, जो कि मानवीय शिक्षा शोध संस्थान, अछोटी, जिला दुर्ग एवं शिक्षकों के सुझाव पर जुलाई, 2009 से 51 शिक्षकों के साथ 6 माह का तथा अगले वर्ष 13 शिक्षकों के साथ 1 वर्ष का अध्ययन शिविर किया गया। शिविर

अवधि में शिक्षकों को प्रतिमाह 15 दिवस मानवीय शिक्षा शोध संस्थान, अछोटी में एवं शेष 15 दिवस अपने पदस्थ कार्यरतशाला में अध्यापन–कार्य करते हैं। सत्र 2015–16 में 35 शिक्षकों का अध्ययन शिविर जारी है। अब तक 120 शिक्षक अध्ययन शिविर कर इसमें पारंगत हो चुके हैं। वर्ष 2007 से 2016 तक हुए अध्ययन शिविर की संख्यात्मक जानकारी तालिका क्रमांक 2.1 में दी गई है।

तालिका क्रमांक 2.1

''छत्तीसगढ़ में चेतना विकास मूल्य–शिक्षा शिविरों की संख्यात्मक जानकारी''

विवरण (2007–2016)	शिविर के दिवस	शिविरों की संख्या	प्रतिभागियों के पदस्तर	प्रतिभागियों की संख्या
1. एडूसेट के द्वारा परिचय शिविर	एक दिवसीय	01	शिक्षक	3500
	पांच दिवसीय	03	व्याख्याता	9800
	सात दिवसीय	01	संकुल समन्वयक	1200
	दस दिवसीय	01	प्राचार्य	1025
	2 घंटा प्रति दिवस	05	9वीं से 11वीं तक के छात्र	1600
2. प्रत्यक्ष परिचय शिविर	सात दिवसीय	149	डाइट, आई.ए.एस.ई.सी.टी.ई., एस.सी.ई.आर.टी., साक्षरता मिशन के अधिकारी, शिक्षक एवं छात्राध्यापक	11,545
3. अध्ययन शिविर	6 माह	01	शिक्षक	51
	01 माह	01	शिक्षक	39
	01 वर्ष	05	शिक्षक	150
योग		**167**		**28,910**

अभ्युक्ति– **परिचय शिविर से** सभी प्रतिभागियों में स्वयं के प्रति विश्वास, संबंधों के प्रति समझ व शिकायत मुक्त जीने का विश्वास, अपनी आवश्यकताओं की पहचान, शिक्षकों में परस्पर तालमेल तथा छात्र व अभिभावकों के साथ पारिवारिक भाव विकसित होने लगता है।

अध्ययन शिविर से– इन सभी में आत्मविश्वास एवं जिम्मेदारी के साथ अपने कार्य–स्थल, परिवार एवं समाज में कार्य करने के प्रति समझ बनी है।

3. ''चेतना विकास मूल्य–शिक्षा पुस्तक (भाग 1 से 5)''– मानवीय मूल्यों की शिक्षा से संबंधित इन पुस्तकों को स्कूलों में व्यापक स्तर पर लाने के पूर्व इसका प्रदेश के 2 जिले दुर्ग एवं महासमुंद के 15–15 विद्यालयों में क्षेत्र–परीक्षण किया गया, जिसके सकारात्मक फीडबैक व सुझाव के आधार पर इन पुस्तकों का कई चरणों में परिषद में कार्यशाला कर संशोधन किया गया एवं परिषद की अकादमिक समिति से अनुमोदित कराया गया। वर्तमान में इन पुस्तकों को

शालाओं के प्रथम कालखण्ड में इसके अध्यापन हेतु संदर्भ सामग्री के रूप में शिक्षकों को उपलब्ध कराने हेतु छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम को मुद्रण का आदेश दिया गया है।

4. समीक्षा सह–अध्ययन बैठक– चेतना विकास मूल्य–शिक्षा के एक वर्षीय अध्ययन शिविर से पारंगत शिक्षकों की 2–2 दिवसीय बैठक वर्ष 2011 से आयोजित की जाती है। इसके माध्यम से शिक्षकों का सतत अध्ययन के प्रति उत्साह बनाए रखते हुए विद्यालय में गुणवत्ता के संवर्धन हेतु उनके द्वारा किए जा रहे बिंदुओं की समीक्षा व परस्पर चर्चा की जाती है।

2. अभिभावक विद्यालय, रायपुर में चेतना विकास मूल्य–शिक्षा कार्यक्रम

एक बालक जैसे–जैसे बड़ा होता है, वह सीखना–समझना प्रारंभ कर देता है। परिवार से सीखता है। विद्यालय के वातावरण एवं शिक्षक से सीखता है। यहीं आगे जाकर उनका संस्कार कहलाता है। प्रत्येक अभिभावक की यही कोशिश रहती है कि उनके बच्चे संस्कारवान बनें, चरित्रवान बनें। अभिभावक अपने बच्चे के अच्छे भविष्य के लिए बेहतर शिक्षा की तलाश करते हैं। तब यह प्रश्न बनता है कि बेहतर शिक्षा या अच्छी शिक्षा किसे कह रहे हैं। इसका स्वरूप क्या होगा? उसके मापदण्ड का आधार क्या होगा? अच्छी शिक्षा–व्यवस्था को सही परिभाषा मिल पाए, बच्चे वास्तव में मूल्यवान व संस्कारवान बन पाएं– इस सपने को साकार करने के लिए कुछ अभिभावक महिलाओं ने मिलकर मानवीय मूल्यों को बच्चों में विकसित करने हेतु रायपुर, छ.ग. में एक ऐसा विद्यालय प्रारंभ किया गया है, जहां हम केवल अच्छी बातें ही करते न रह जाएं, बल्कि उसे इस धरती पर भी हकीकत में उतारा जा सके। इसी उद्देश्य को लेकर अभिभावक विद्यालय की स्थापना वी.आई.पी. रोड, रायपुर में जून, 2011 में की गई थी। जहां बच्चों को 'शरीर' एवं 'मैं जीवन' दोनों की आवश्यकता की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए विषय–वस्तु का निर्माण किया गया एवं बच्चों को चेतना विकास मूल्य आधारित शिक्षा देना प्रारंभ किया है।

मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य–शिक्षा की शिक्षा प्राथमिक कक्षाओं से अभिभावक विद्यालय में दी जा रही है, जिसके प्रेरणास्त्रोत ए. नागराज जी (अमरकंटक म.प्र. से) हैं। इसके संचालनकर्ता 'मानवीय शिक्षा शोध संस्थान', अछोटी, जिला दुर्ग हैं। यह विद्यालय छत्तीसगढ़ शासन द्वारा मान्यता प्राप्त है। यहां नर्सरी से छठी तक के बच्चों को शिक्षा दी जा रही है। अभ्युदय संस्थान, अछोटी में कक्षा छठी से बारहवीं तक की शिक्षा बच्चों को देने की योजना है। वहीं चेतना विकास मूल्य–शिक्षा आधारित महाविद्यालय का निर्माण, बेमेतरा, छत्तीसगढ़ में किया गया है। यह महाविद्यालय इन्हीं भावी बच्चों के लिए तैयार किया जा रहा है।

अभिभावक विद्यालय की अध्यापिकाओं से बातचीत से ज्ञात हुआ कि यहां बच्चों को प्रथम वर्ष मां के बारे में बताया जाता है। द्वितीय वर्ष में माता–पिता, भाई–बहन के बारे बताया जाता है। तीसरे वर्ष में शिक्षक के बारे में एवं चौथे वर्ष में परिवार के बारे में एवं पांचवें वर्ष में समाज के बारे में बताया जाता है। अभिभावक विद्यालय में पांचवे वर्ष तक व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है, जिससे बच्चा मानव एवं प्रकृति के संबंधों को समझता है। वहीं कक्षा पांच के बाद से वह मानव एवं प्रकृति के साथ शोषणमुक्त वस्तुओं का निर्माण करता है। इस विद्यालय में हर विषय की शिक्षा प्रदान की जाती है, जैसे– गणित, विज्ञान, हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी एवं चेतना विकास मूल्य–शिक्षा। यहां प्रत्येक विषयों को स्वयं, परिवार, समाज, प्रकृति–संबंध से जोड़कर पढ़ाया जाता है अर्थात् सर्वशुभ को ध्यान रखकर, ताकि बच्चा इन सबके साथ संबंधों को जान सके। उनके बारे में पूरा समझ सके। इनके साथ न्यायपूर्ण संबंध को पहचान पाए। भविष्य में यह विद्यार्थी शोषणमुक्त आजीविका का निर्माण कर सके।

इसलिए ''शोषणमुक्त वस्तुओं का निर्माण करना भी सिखाया जा रहा है।'' अभिभावक विद्यालय एक ऐसा विद्यालय है, जहां पर बच्चों को व्यावहारिक विकास हेतु समझ प्रदान करने का कार्य किया जा रहा है। संपूर्ण व्यवस्था को समझकर स्वयंस्फूर्त ईमानदारी, जिम्मेदारीपूर्वक, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना ही चेतना विकास मूल्य–शिक्षा का उद्देश्य है।

1. अभिभावक विद्यालय में सभी शिक्षकों के लिए शिक्षा व्यवसाय नहीं, बल्कि समाज के प्रति जिम्मेदारी का वहन है। ये शिक्षक वेतनभोगी नहीं हैं।
2. अभिभावक विद्यालय में शिक्षा का व्यवसायीकरण न होकर अभिभावकों एवं शिक्षकों द्वारा आवश्यकतानुसार बच्चों को दी जाने वाली सुविधाओं के लिए राशि निश्चित की जाती है।

3. ''कक्षा 1 से 12 एवं स्नातक तक चेतना विकास मूल्य–शिक्षा कक्षा के लिए तैयार किए गए पाठ्यक्रमों की विषय–वस्तु'' की जानकारी चतुर्थ अध्याय में दी गई है।

3. मानवीय शिक्षा शोध विभाग, समाधान महाविद्यालय, बेमेतरा, छत्तीसगढ़

समाधान महाविद्यालय, बेमेतरा, छत्तीसगढ़ में सितंबर, 2012 से मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित सात दिवसीय जीवन विद्या परिचय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें बी.एड. के 160 शिक्षकों का प्रथम शिविर 20 सितंबर को आयोजित किया गया। इसी तरह 2013 में 200 बी.एड. के शिक्षक प्रशिक्षार्थी एवं 2014 में 330 शिक्षक प्रशिक्षार्थी, 2015 में 322 एवं 2016 में 70 शिक्षक प्रशिक्षक इन सात दिवसीय शिविरों से लाभान्वित हो चुके हैं। वर्तमान 2017 में जनवरी में बी.एड. के 152 शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित हुए। इसे तालिका क्रमांक 2.2 में दर्शाया गया है। इस तरह समाधान महाविद्यालय में मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित विषय–वस्तु को अपने महाविद्यालय में विद्यार्थियों के हित में पाया गया है, जिससे प्रेरित होकर महाविद्यालय में इसे वहां से तैयार हुए भावी शिक्षकों को इस वास्तविकता से

परिचय कराना एक आवश्यकता हो गई है। मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद से निःसृत 'चेतना विकास मूल्य–शिक्षा' जीवन विद्या शिविर संख्या सूची–

तालिका क्रमांक 2.2

क्र.	दिनांक	शिविरार्थी	शिविरार्थियों की संख्या
1	20 सितंबर से 26 सितंबर, 2012 तक	समाधान के बी.एड. एवं स्नातक कक्षा के शिक्षक, छात्र–छात्राएं एवं महाविद्यालय प्रबंधन समिति	160
2	8 से 14 मार्च, 2013 तक	समाधान के बी.एड. एवं स्नातक कक्षा के शिक्षक, छात्र–छात्राएं एवं महाविद्यालय प्रबंधन समिति	80
3	18 से 24 मार्च, 2013 तक	समाधान के बी.एड. एवं स्नातक कक्षा के शिक्षक, छात्र–छात्राएं एवं महाविद्यालय प्रबंधन समिति	120
4	23 से 30, जनवरी 2014 तक	समाधान के बी.एड. एवं स्नातक कक्षा के शिक्षक, छात्र–छात्राएं एवं महाविद्यालय प्रबंधन समिति	190
5	15 से 22, अगस्त 2014 तक	बी.एड. के शिक्षक, छात्र–छात्राएं एवं महाविद्यालय प्रबंधन समिति	95
6	23 से 25, नवंबर 2014 तक	कृषि महाविद्यालय, बेमेतरा के छात्र–छात्राएं	45
7	23 से 29 जनवरी, 2015 तक	बी.एड. के शिक्षक, छात्र–छात्राएं एवं महाविद्यालय प्रबंधन समिति	92
8	2 मई से 8 मई, 2015 तक	बी.एड. के शिक्षक, छात्र–छात्राएं एवं महाविद्यालय प्रबंधन समिति	120
9	5 मई से 11 अक्टूबर, 2015 तक	बी.एड. के शिक्षक, छात्र–छात्राएं एवं महाविद्यालय प्रबंधन समिति	110
10	25 से 27 अक्टूबर, 2016 तक	कृषि महाविद्यालय, बेमेतरा के छात्र–छात्राएं	70
11	25 से 31 जनवरी, 2017 तक	बी.एड. के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के छात्र–छात्राएं	152
12	20 से 27 सितम्बर 2018 तक	बी.एड. के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के छात्र–छात्राएं	120

13	1 से 7 अक्टूबर 2018 तक	बी.एड. के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के छात्र–छात्राएं	125
		कुल	1479

4. मानवीय शिक्षण शोध संस्था, ग्राम परड़ा, बुलढाना, महाराट्र में 'चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम'

मानवीय शिक्षण शोध संस्थान, के सक्रिय प्रतिभागियों से प्राप्त जानकारी के अनुसार– महाराष्ट्र में 2010–11 में शिक्षामंत्री नंदकुमार के सहयोग से मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्व आधारित जीवन विद्या शिविरों का आयोजन एस. सी. ई. आर. टी. महाराष्ट्र के प्राइमरी शिक्षकों के लिए आरंभ हुआ। तीन–चार शिविर के पश्चात् परिचय शिविर कर चुके शिक्षक प्रशिक्षार्थी में, जिन्हें आगे अध्ययन शिविर में जाने की जिज्ञासा हो, उनके लिए 6 माह एवं एक वर्षीय अध्ययन शिविर की व्यवस्था की गई। इस तरह यवतमाल, चंद्रपुर, वर्धा से 1000 से भी ज्यादा शिक्षक लाभान्वित हो चुके हैं। बुलढाना एवं यवतमाल, चंद्रपुर, वर्धा में एस.सी.ई.आर.टी. महाराष्ट्र सरकार की ओर 2010–11 से बी.एड. व डी.एड. शिक्षक प्रशिक्षक, प्राचार्य एवं उच्च अधिकारी आठ दिन के परिचय शिविर एवं एक माह से लेकर एक वर्षीय अध्ययन शिविर से गुजर रहे हैं। महाराष्ट्र के साथी शिक्षकों की आपसी सहमति से अभिभावक विद्यालय रायपुर से प्रेरणा पाकर मूल्य–शिक्षा आधारित विद्यालय खोलने की आवश्यकता महसूस की, जिससे 2015 में 'मानवीय शिक्षण शोध संस्था' का शुभारंभ ग्राम परड़ा, जिला बुलढाना में प्रारंभ किया गया और जुलाई, 2016 में प्री–प्राइमरी विद्यालय का नर्सरी व के.जी. के बच्चों के लिए प्रारंभ हुआ। कक्षा एक से कक्षा पांच तक मान्यता प्राप्त विद्यालय हेतु आवेदन प्रस्तावित किया जाएगा। इसी तरह यवतमाल, चंद्रपुर, वर्धा में भी चेतना विकास मूल्य–शिक्षा आधारित विद्यालय खोलने की तैयारी महाराष्ट्र के प्राथमिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों द्वारा की जा रही है। वर्तमान में 2016–17 में जिला बुलढाना से प्राथमिक शिक्षा के 400 शिक्षकों का जीवन विद्या परिचय शिविर हो चुका है। यहीं शिक्षक कुछ और शिविरों के पश्चात् अध्ययन शिविर में जाएंगे– ऐसा शिक्षकों से बातचीत पर पता चला। इस तरह वर्तमान में पुणे एवं मुंबई में पारिवारिक एवं सामाजिक स्तरों पर जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

5. ''राज्य शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली में मूल्य–शिक्षा''

दिल्ली के शिक्षामंत्री व उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी ने दिल्ली के शिक्षा विभाग में कार्यरत 40 उच्च शिक्षा अधिकरियों की मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्वाद आधारित सात दिवसीय आवासीय प्रथम जीवन विद्या शिविर 2–8 अप्रैल, 2015 अभ्युदय संस्थान, अछोटी में लगाई। उसके बाद इसे दिल्ली शिक्षा में अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में लागू करने के लिए दिल्ली के एस.सी.ई.आर.टी. के अंतर्गत वहां पदस्थ समस्त अधिकारियों एवं शिक्षकों के लिए मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित जीवन विद्या शिविरों का क्रम लगातार जारी रहा। एस.सी.ई. आर.टी. के शिक्षकों से प्राप्त जानकारी के आधार पर मई, 2015 से जनवरी, 2016 तक 1000 से अधिक शिक्षक एवं कर्मचारी जीवन विद्या शिविर से लाभान्वित हुए। सितंबर, 2015 से जुलाई, 2016 तक हापुड़ संस्थान में मॉडल स्कूल के शिक्षक एवं एच.ओ.एस के शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों का शिविर हुआ, जिसमें 23 स्कूलों के साथ दिल्ली में 1400 शिक्षकों ने इसका लाभ लिया। दिल्ली के त्यागराज स्टेडियम में शिक्षक एवं कर्मचारियों के लिए शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 18,571 शिक्षक प्रशिक्षित हुए। इसी तरह छह और शिविर एस.सी.ई.आर.टी. के शिक्षकों के लिए आयोजित किए गए, जिनमें 18,000 शिक्षकों ने इनमें भाग लिया। आगामी जनवरी 2017 में 15 दिनों के लिए मानवीय शिक्षा शोध संस्थान अभ्युदय संस्थान, अछोटी में अध्ययन शिविर का आयोजन किया गया एवं 24 अप्रैल 3 मई 2017 से हापुड़ के संस्थान में मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद के वांग्मय में से एक 'मानव व्यवहार दर्शन' पर 10 दिवसीय, महाविद्यालयों के शिक्षकों के लिए आवासीय अध्ययन शिविर, होना तय हुआ है। अभी तक के हुए शिविरों में 23,000 के लगभग शिक्षक शिविरों के दौर से गुजर चुके हैं। आवासीय शिविरों के लिए दिल्ली से 70 किलोमीटर दूर हापुड़ में स्थित अभ्युदय संस्थान, हापुड़ में सात दिन की आवासीय जीवन विद्या कक्षाएं आयोजित की जा रही हैं। शिक्षामंत्री मनीष सिसोदिया द्वारा मूल्य–शिक्षा को शिक्षा–व्यवस्था में भावी युवा पीढ़ी के लिए अनिवार्य विषय के रूप में लाने की योजना है। शिक्षामंत्री मनीष सिसोदिया ने नेशनल एजुकेशन नेटवर्क द्वारा आयोजित 'मूल्य–शिक्षा और नैतिकता' विषय पर अपने विचार रखे थे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा था कि ''वर्तमान शिक्षा–प्रणाली से छात्रों का मशीनीकरण करने की ओर ध्यान दिलाते हुए छात्रों को अच्छा इंसान बनाने के लिए शिक्षा में आमूल–चूल परिवर्तन की जरूरत है। हम मूल्यों को लेकर उलझन में हैं। हम समझते हैं कि अपने बच्चों को कुछ अच्छे लोगों की जीवनी या कुछ कहानियां पढ़ाकर अच्छा करने के लिए प्रेरित करना यही मूल्य है और बाकी सब शिक्षा है तो यही उलझन है। शिक्षा में सुधार के लिए शिक्षा को बदलना होगा, मूल्यांकन प्रणाली और पाठ्य–पुस्तकों को बदलना होगा। जिससे यही बच्चे अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद एक समझदार, ईमानदार, जिम्मेदार नागरिक के रूप में खड़े हो पाएं एवं स्वच्छ, सुंदर व सुखी परिवार, भयमुक्त समाज, मानव कल्याण आधारित राष्ट्र–निर्माण के लिए आगे आ पाएं।

तालिका क्रमांक 2.3

दिल्ली में मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित 'जीवन विद्या शिविर' की संख्यात्मक जानकारी''

क्र.	दिनांक	दिनों की संख्या	शिविर स्थान	प्रतिभागी	प्रतिभागियों की संख्या
1	अप्रैल, 2015	7 दिन	मानवीय शिक्षा शोध संस्थान अभ्युदय संस्थान अछोटी, जिला दुर्ग	Education Minister, SCERT, DIET, Principals DOE, Education Officials	40
2	मई 2015 से जनवरी, 2016 तक	दिशानिर्देश कार्याशाला	दिल्ली	HOS, DOE, SCERT Staff	1000
3	जुलाई, 2015	8 दिन	दिल्ली	DOE, SCERT & HOS	
4	सितंबर, 2015 से जून, 2016 तक	10 परिचय शिविर	अभ्युदय संस्थान हापुड़ में उत्तर प्रदेश	HOS, Model school Teacher	
5	मई–जुलाई, 2016	11 परिचयात्मक शिविर	23 स्कूलों के साथ दिल्ली में	शिक्षक एवं कर्मचारियों के साथ	1400 शिक्षक
6	जुन–जुलाई, 2016	6 शिविर 3 तीन–तीन दिनों के लिए	त्यागराज स्टेडियम, नई दिल्ली	SCERT शिक्षकों के लिए	18,000
7	जुन–जुलाई, 2016	3 तीनों के लिए	त्यागराज स्टेडियम	शिक्षक, कर्मचारियों के लिए (723 शिक्षक, 406 कर्मचारी)	18,571
8	आगामी 2017	15 दिनों के लिए	मानवीय शिक्षा शोध संस्थान अभ्युदय संस्थान, अछोटी में	अध्ययन शिविर	

फरवरी, 2017 में उच्च शिक्षा में मूल्य–शिक्षा की आवश्यकता पर 6वीं अंतराष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई थी, उसमें दिल्ली शिक्षा विभाग एस.सी.ई.आर.टी. की प्रस्तुति से प्राप्त कुछ आंकड़े तालिका क्रमांक 2.3 में प्रस्तुत हैं–

6. ''आई.ए.एस.ई. मान्य विश्वविद्यालय, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, राजस्थान''

आई.ए.एस.ई. मान्य विश्वविद्यालय, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, में दिनांक 25.02.2011 को माननीय कुलाधिपति श्री कनकमल दूगड़ अध्यक्षता में मूल्य–शिक्षा विभाग के तदर्थ अध्ययन मंडल की बैठक संपन्न हुई। अध्ययन मंडल की बैठक में डा. सुरेंद्र पाठक, डॉ. शेरसिंह, डॉ. विद्यानंद पाण्डेय, डॉ. राजकुमार, श्रीमती सुनीता गौतम एवं विशेषज्ञ श्री सुरेंद्र पाल (अहमदाबाद) और श्री राघव मित्तल (नई दिल्ली) उपस्थित थे, जिसमें चेतना विकास मूल्य–शिक्षा के स्नातक, स्नातकोत्तर और एम.फिल. के प्रस्तावित पाठयक्रमों पर विचार–विमर्श हुआ। विभिन्न स्तर पर पाठयक्रमों में शामिल करने के मुद्दों पर विचार–विमर्श हुआ। इस पाठयक्रम को अगले अकादमिक सत्र जुलाई, (2011) से लागू किए जाने की अनुशंसा की गई। वर्तमान में वहां मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित मूल्य–शिक्षा में शोध की उपाधि हेतु शोध–कार्य कराया जा रहा है एवं समय–समय पर मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित जीवन विद्या कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जाता है। 8 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 8 से 14 अगस्त, 2016 में किया गया था, जिसमें बी. एस. टी. सी., बी.एड., एम. एड. , स्नातक एवं स्नात्कोत्तर के विद्यार्थियों सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं अन्य उपस्थित रहे। इसमें कुल 600 के लगभग शिविरार्थी लाभान्वित हुए।

''आई. आई. टी., एन. आई. टी. तकनीकी विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में मूल्य शिक्षा लोकव्यापीकरण कार्यक्रम''

तकनीकी शिक्षा में मूल्य–शिक्षा कार्यक्रम का प्रारंभ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली में 1991–92 में आई.आई.टी. दिल्ली के प्राफेसर सत्या जी के प्रयासों से प्रारंभ हुआ। 1996 में कानपुर एवं 2003 में आई. आई. आई.टी. हैदराबाद एवं शासकीय तकनीकी महाविद्यालय वर्तमान में एन.आई.टी. रायपुर छ.ग.। 2009 में उत्तर प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालयों में मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य–शिक्षा का अध्यापन–कार्य प्रारंभ हुआ है। कुछ संस्थानों की जानकारी नीचे दी गई है।

1. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, (IIT) दिल्ली

अनेक अनौपचारिक प्रयासों के उपरांत दिल्ली आई.आई.टी. में प्रोफेसर सत्या जी के प्रयासों से 1991–92 आई.आई.टी. के शिक्षकों के साथ श्रद्धेय नागराज जी द्वारा प्रतिपादित 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित मूल्य–शिक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसके आधार पर प्रोफेसर सत्य जी ने विद्यार्थियों के बीच में इसे संवाद करने में सफलता प्राप्त की। आई. आई. टी. दिल्ली में वर्ष 1996 में इसे पाठ्यक्रम के आंशिक रूप में शामिल किया गया। 2001 में राष्ट्रीय मूल्य–शिक्षा केंद्र की स्थापना हुई और 2002–05 के मध्य जीवन विद्या को मूल्य–शिक्षा पाठ्यक्रम के रूप में विकसित करने में सफलता प्राप्त हुई। आई.आई.टी. दिल्ली में राष्ट्रीय मूल्य–शिक्षा संसाधन केंद्र (इंजीनियरिंग हेतु) ने 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद'

आधारित मूल्य–शिक्षा आधारित तीन कोर्स बनाए। वर्तमान में आई.आई.टी. दिल्ली में आने वाले सभी छात्रों को चेतना विकास मूल्य–शिक्षा का परिचय दिया जाता है। 22–24 मई, 2007 को आई. आई. टी. दिल्ली में आई. आई. आई. टी. हैदराबाद व आई. आई. टी. कानपुर के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन हुआ, जिसमें 200 से ज्यादा अकादमिक संस्थाओं के लगभग एक हजार प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, जिसका उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने किया।

2. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), कानपुर

मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्वाद आधारित कक्षाएं एवं शिविर का आयोजन अनौपचारिक रूप से 1996 में प्रो. गणेश बागड़िया के सहयोग से प्रारंभ हुआ। वर्तमान में यहां भी छात्रों एवं शिक्षकों हेतु 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित मूल्य–शिक्षा हेतु जीवन विद्या शिविर आयोजित किए जाते हैं। इसे नियमित पाठ्यक्रम में लाया गया है।

3. अंतर्राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (IIIT), हैदराबाद

वर्ष 2005 से जीवन विद्या को एक अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में लागू किया गया। 2004–05 से यहां पर जीवन विद्या–मानव चेतना विकास शिविरों का आयोजन हुआ। वर्तमान में सभी छात्रों एवं शिक्षकों को 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित मूल्य–शिक्षा हेतु जीवन विद्या शिविर कराए जाते हैं। यह उनके नियमित पाठ्यक्रम का हिस्सा है। आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में मध्यस्थ दर्शन सह–अस्त्विवाद आधारित मूल्य–शिक्षा का अस्तित्व कब और कैसे प्रारंभ हुआ एवं वर्तमान स्थिति क्या है की जानकारी फरवरी 2017 में मानवीय मूल्य शिक्षा पर कानपुर उत्तर प्रदेश में आयोजित छठवां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में श्री प्रदीप रामचरला व्याख्याता सिविल इंजीनियर आई. आई. आई. टी. हैदराबाद के उद्बोधन से प्राप्त की गई है, जिसकी जानकारी निम्न प्रकार है।

आई. आई. आई. टी. हैदराबाद, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना का रिपोर्ट–''2005 से आई.आई.आई.टी. हैदराबाद में मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य–शिक्षा का प्रारंभ हुआ। यहां मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य–शिक्षा की कार्यशाला 'जीवन विद्या शिविर' एवं मूल्य–शिक्षा कक्षाओं का दौर प्रारंभ हुआ। जून, 2011 में एक दिवसीय वाइस चांसलर के लिए कार्यशाला का संचालन किया गया था, जिसमें 54 वाइस चांसलर थे और इसके डायरेक्टर भी कार्यशाला में शामिल थे। अन्य महाविद्यालयों के सहयोग से आई.आई.आई.टी. हैदराबाद ने इस कार्यशाला का आयोजन किया था। अन्य विद्यालयों के सहयोग से जनवरी, 2012 में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 125 लोग उपस्थित थे। इस सम्मेलन में भूटान से रॉयल यूनिवर्सिटी ने भी भाग लिया था। दूसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 2015 में हुआ। इसमे 120 लोग उपस्थित

थे। इस सम्मेलन में मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा को एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस सम्मेलन से इसे आंध्र प्रदेश के स्नातक, जैसे बीए., बी.एस.सी., बी.कॉम. के विद्यालयों में एक अनिवार्य विषय के रूप में प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया। आंध्र प्रदेश के कलेक्टर भी मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित इस सात दिवसीय जीवन विद्या शिविर से लाभान्वित हुए। आज आंध्र प्रदेश के विद्यालयों के 23 प्राचार्य भी इस शिविर से लाभान्वित हो चुके हैं। आंध्र प्रदेश राज्य के 23 जिलों से 23 प्राचार्य उपस्थित रहे। सभी प्राचार्य की सहमति से इन सभी महाविद्यालयों के लिए यह मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य–शिक्षा की कक्षाएं प्रारंभ की गई हैं। इस विषय को पढ़ाने के लिए शिक्षकों की आवश्यकता को देखते हुए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। तब दो 5 दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया। इसके साथ–ही–साथ विद्यालयों में भी चलाया गया, जिससे लगभग 60 शिक्षकों का शिविर ऑनलाइन टीवी चैनल के माध्यम से 170 सेंटरों में चलाया गया। इसमें लगभग 15,000 शिक्षक इस शिविर से लाभान्वित हुए। इससे प्रभावित होकर अंब्रेला विश्वविद्यालय ने इसे अपने यहां चलाने का निर्णय लिया। वाइस चांसलर के सहयोग से आगे 23 जिलों के लिए लगातार चार दिनों के ऑनलाइन जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया गया, जिससे 846 शिक्षक लाभान्वित हुए और दूसरे दौर में 814 शिक्षक लाभान्वित हुए और तीसरे दौर में 591 शिक्षक इस शिविर से लाभान्वित हुए। कुल 2,200 शिक्षक लाभान्वित हुए। इसमें केवल एक दिन प्रश्न–उत्तर का सेशन रखा गया था। इस कार्यक्रम को चलाने के लिए कॉन्फ्रेंस की सुविधा दी गई थी। आज 2,200 शिक्षक शिविर प्रबोधक/शिविर संचालक के रूप में तैयार हैं, जिन्होंने और अन्य शिक्षकों का शिविर लेना प्रारंभ किया है। वर्तमान में आंध्र प्रदेश के 23 जिलों में यह लागू हो गया है। सचिव श्री अजय मिश्रा एवं प्रो. राजीव सांगल डायरेक्टर आई. आई. आई.टी. हैदराबाद, आई.आई.एस. श्रीमती सुनिता के सहयोग से 5 अगस्त, 2013 की इस मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित मूल्य–शिक्षा का शुभारंभ किया गया। वर्तमान में यह दो राज्यों में आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना में चल रहा है। दो राज्यों के विभाजन के बाद भी शिविर एक ही जगह पर दोनों के लिए होता है।

वर्तमान स्थिति– दो राज्य तेलगांना एवं आंध्र प्रदेश में 70 महाविद्यालयों में, 17 विश्वविद्यालयों में जहां 3,000 महाविद्यालयों के लिए एवं 5,000 शिक्षकों द्वारा यह मूल्य–शिक्षा दी जा रही है, जिससे 5 लाख तक विद्यार्थी इस कोर्स का लाभ ले रहे हैं। 3 घण्टा प्रति सप्ताह यह कक्षाएं लगाई जाती हैं।''

4. रायपुर छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ रायपुर में 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित जीवन विद्या शिविरों का प्रारंभ 1992–93 से प्रारंभ हुआ। सन् 2001 में 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित मूल्य–शिक्षा हेतु मानवीय शिक्षा शोध केंद्र अभ्युदय संस्थान की स्थापना जिला दुर्ग अछोटी ग्राम में हुई।

यह अभ्युदय संस्थान स्वधन को मानव में चेतना विकास हो, इस उपकार विधि से परिवार के समूह द्वारा प्रारंभ किया गया। यहां पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को जीवन विद्या शिविर के माध्यम से अपने जीवन–मूल्यों से परिचय कराया जाता है। हम क्यों जी रहे हैं और सही जीवन जीने का तरीका क्या है? आवासीय शिविरों के माध्यम से सभी मानव–जाति को परिचय कराया जाता है। अभ्युदय संस्थान में भारत के बाहर इंग्लैंड, डेनमार्क, जर्मनी, इटली, इजराइल, कनाडा, भूटान इत्यादि देशों से विदेशी अध्ययनकर्त्ताओं ने भी 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित जीवन विद्या शिविरों में भाग लिया।

छत्तीसगढ़ तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश हेतु अब तक हुए प्रयास

''शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर एवं राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान NIT रायपुर एवं अन्य

भारत सरकार की उच्च शिक्षा–नीति के अनुसार, मानवीय मूल्य–शिक्षा के समावेश हेतु तकनीकी शिक्षा में किए गए प्रयासों को गति देने के लिए केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आई.आई.टी. दिल्ली में इंजीनियरिंग में मूल्य–शिक्षा के लिए राष्ट्रीय संसाधन केंद्र (National Resource Center for Value Education in Engineering) (NRCVEE) की वर्ष 2002 में स्थापना के पश्चात् इस दिशा में उल्लेखनीय गति आई है। NRCVEE के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को जीवन–ज्ञान, मानव के साथ संबंध एवं प्रकृति के साथ संबंध के बारे में दक्ष बनाने हेतु और उनमें संपूर्ण श्रेष्ठता को विकसित करने का एक अभिनव प्रयास शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय, रायपुर में मध्यस्थ दर्शन के प्रकाश में जीवन विद्या शिविरों के माध्यम से सन् 2002 से चल रहा है। इस प्रयास के अंतर्गत शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय, रायपुर द्वारा संचालनालय, तकनीकी शिक्षा, छत्तीसगढ़ शासन के सहयोग से अभ्युदय संस्थान, अछोटी (मानव के सर्वतोमुखी विकास को समर्पित संस्था) के माध्यम से छत्तीसगढ़ राज्य की तकनीकी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों का प्रभाव अत्यंत ही सकारात्मक रहा है।

शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय, रायपुर एवं राष्ट्रीय प्रोद्यौगिकी संस्थान (NIT) रायपुर

2003 में दिल्ली आई.आई.टी. के प्रोफेसर आर. आर. गौड़ एवं एन.आई.टी. रायपुर के विभागाध्यक्ष डॉ. समीर बाजपेयी एवं निर्देशक के प्रयासों के कारण अभ्युदय संस्थान, अछोटी की पहल पर 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' मानव चेतना विकास मूल्य–शिक्षा पर आधारित अनिवार्य पाठ्यक्रम की शुरुआत हुई। तब 2,000 छात्रों अभ्युदय संस्थान में 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित मूल्य–शिक्षा कार्यशाला (जीवन विद्या शिविर) से लाभांन्वित हुए। स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय ने 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित मूल्य–शिक्षा को नियमित पाठ्यक्रम के रूप में सभी 16 इंजीनियरिंग महाविद्यालय में प्रारंभ कराया। सत्र 2003–04 से राज्य के समस्त इंजीनियरिंग महाविद्यालयों के अखिल भारतीय

तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) का आदर्श पाठ्यक्रम लागू किया गया। पूर्व प्रयासों की सफलता को देखते हुए शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर, बिलासपुर एवं जगदलपुर ने इस पाठ्यक्रम के सभी सत्रों में अनिवार्य जनरल प्रोफिशिएंशी विषय की कक्षाएं अभ्युदय संस्थान, अछोटी के सहयोग से मध्यस्थ दर्शन आधारित कक्षाओं एवं जीवन विद्या शिविरों द्वारा करवाने का निर्णय लिया। इस हेतु शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर ने अभ्युदय संस्थान, अछोटी के साथ 3 नवंबर, 2003 को एक आपसी समझौता (Memorandum of Understanding) पत्र पर हस्ताक्षर किए।

इस MOU के तहत नवंबर, 2003 से अक्टूबर, 2005 तक लगातार आयोजित जीवन विद्या शिविरों से 1,332 विद्यार्थी लाभान्वित हुए। इसी प्रकार शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय बिलासपुर के 210 एवं शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय जगदलपुर के 230 विद्यार्थी जनरल प्रोफिशिएंसी पाठ्यक्रम के अंतर्गत मूल्य–शिक्षा से मानव चेतना विकास की मध्यस्थ दर्शन आधारित कक्षाओं एवं शिविरों से लाभान्वित हुए हैं।

इन प्रयासों से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति क्षमता, विश्लेषणात्मक क्षमता, समस्या–निवारण कौशल, आपस में तालमेल, कक्षाओं में अनुशासन, जिम्मेदारी, रैगिंग में नियंत्रण आदि में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। 2003 से वर्तमान 2017 में NIT RAIPUR मे 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित मूल्य–शिक्षा की नियमित कक्षाएं यहां के ग्यारह ब्रांच के द्वितीय वर्ष के बी.टेक. के विद्यार्थियों के लिए लग रही हैं, साथ–ही–साथ चेतना विकास मूल्य–शिक्षा आधारित मनोवैज्ञानिक परामर्श के लिए 'समाधान कक्ष' की भी व्यवस्था है, जिससे दैनिक जीवन से संबंधित कुछ बातें विद्यार्थी अपने मन की व्यक्तिगत समस्या के समाधान हेतु सलाह ले पाए। ''7 नवंबर, 2006 में पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने स्वयं एन.आई.टी. रायपुर आकर 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित मूल्य–शिक्षा कार्य–गतिविधियों का अवलोकन किया। छत्तीसगढ़ स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में मूल्य–शिक्षा को सन् 2006 जुलाई से पाठ्यक्रम में शामिल किया गया।

छत्तीसगढ़ के अन्य विद्यालयों में मूल्य–शिक्षा–

1. कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय रायपुर, छ.ग. के सभी महाविद्यालयों में 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित मूल्य–शिक्षा की नियमित कक्षाएं लगाई जा रही हैं।
2. रायपुर के इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में भी 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित मूल्य–शिक्षा की नियमित कक्षाएं लगाई जा रही हैं।
3. बेमेतरा जिला दुर्ग के समाधान महाविद्यालय में सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए जीवन विद्या शिविर कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

5. ''डॉ. अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश''

मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित जीवन विद्या शिविर एवं चेतना विकास मूल्य–शिक्षा के माध्यम से डॉ. अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ में 2009 से 670 विश्वविद्यालयों में एवं 5 विश्वविद्यालयों में यह 'सार्वभौम मानवीय मूल्य' शिक्षा के नाम से यह चेतना विकास मूल्य–शिक्षा का कार्यक्रम वाइस चांसलर प्रो. प्रेमव्रत ने शुभारंभ करवाया था, जो आज वर्तमान तक अनवरत रूप से जारी है। इस शिक्षा से 80,000 से भी ज्यादा विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। यहां विश्वविद्यालयों के सभी विद्यार्थियों के लिए शिविर एवं मूल्य–शिक्षा कक्षाएं लगाई जाती हैं। वर्तमान में 550 महाविद्यालय 8 दिवसीय 'जीवन विद्या शिविर' का 1000 शिक्षक लाभ ले चुके हैं। पांच विश्वविद्यालयों के नाम इस प्रकार है–

1. अजय कुमार गर्ग तकनीकी महाविद्यालय, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।
2. ए. बी. ई. एस. तकनीकी महाविद्यालय, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।
3. महाराणा प्रताप तकनीकी महाविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश।
4. हिन्दुस्तान तकनीकी एवं विज्ञान महाविद्यालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश।
5. आर. यू. तकनीकी संस्थान, बिजनौर, उत्तर प्रदेश।

6. ''आई. के. गुजराल पंजाब तकनीकी विश्वविद्यालय, कपूरथला''

मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य–शिक्षा कक्षाएं एवं 'आठ दिवसीय जीवन विद्या शिविर' कार्यशाला 2011 से चलाई जा रही है एवं एक मूल्य–शिक्षा सेल की स्थापना की गई। यह मूल्य–शिक्षा कार्यशाला पंजाब के 400 मान्यताप्राप्त महाविद्यालयों में चलाया जा रहा है। यहा 2014 से मूल्य–शिक्षा पर दो साल अर्थात् चार सेमेस्टर का एम. टेक. शिक्षा का सर्टिफिकेट कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है एवं एक वर्षीय अर्थात् दो सेमेस्टर में पी. जी. डिप्लोमा इन ह्यूमन वेल्युस के नाम से कराया जाता है। इस विश्वविद्यालय से इसकी विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई है।

7. ''रॉयल विश्वविद्यालय, भूटान, थिम्पू

रॉयल विश्वविद्यालय भूटान में 2012 से मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित, जीवन विद्या शिविर एवं चेतना विकास मूल्य–शिक्षा की कक्षाएं लगाई जाती हैं। 2016 तक 15,000 विद्यार्थी, 1018 शिक्षक एवं 69 सार्वभौम मानवीय मूल्य–शिक्षा अध्यापन शिक्षक इस जीवन विद्या शिविर से लाभान्वित हो चुके हैं।

8. ''आत्मीय ग्रुप संस्थान, राजकोट, गुजरात

मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्वाद आधारित मूल्य–शिक्षा कक्षाएं एवं आठ दिवसीय 'जीवन विद्या शिविर' कार्यशाला का आयोजन मार्च, 2014 से प्रारंभ हुआ। वर्तमान में यह कार्यक्रम छः महाविद्यालयों एवं दो स्कूलों में चल रहा है। 2014 में कुल शिविर संख्या 87 थी, जिसमें इस

शिविर से 1146 शिक्षक एवं 4973 विद्यार्थी लाभान्वित हुए। 2015 में कुल 39 शिविर के आयोजन किए गए, जिनमें 652 शिक्षक एवं 2373 विद्यार्थियों ने भाग लिया। 2016 में कुल 41 कार्यशाला शिविर हुए, जिनमें 875 शिक्षक एवं 2455 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।
2017 में 2 शिविर आयोजित किए गए, जिसमें 245 शिक्षक व कर्मचारियों ने भाग लिया।

9. ''भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, वाराणसी (IIT, BHU)

मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्वाद आधारित शिविर एवं मूल्य–शिक्षा कक्षाओं का प्रारंभ जुलाई, 2014 से निदेशक प्रों. राजीव सांगल के (पूर्व निदेशक–आई. आई. आई. टी. हैदराबाद) सहयोग से हुआ है। आपके सहयोग से ही आई. आई. आई. टी. हैदराबाद में भी इन कार्यकमों की शुरुआत की गई थी। यहां तीन दिवसीय एवं सात दिवसीय 'जीवन विद्या शिविर' का आयोजन प्रतिमाह में किया जा रहा है। यहां पीएच. डी. के विद्यार्थियों के लिए भी यह शिविर एवं कक्षाएं लगाई जाती हैं। कुछ विद्यार्थी जो 6 माह का अध्ययन शिविर कर चुके हैं, वे महाविद्यालय में अन्य विद्यार्थियों के मूल्य–शिक्षा अध्यापन–कार्य में अपनी भागीदारी करते हैं। वर्तमान में **आई. आई. टी., बी. एच. यू., बनारस के अलावा आई. आई. टी. मण्डी, आई. आई. टी. पटना, आई. आई. टी., गांधीनगर में** भी यह जीवन विद्या शिविर एवं चेतना विकास मूल्य–शिक्षा कक्षाएं लगाई जाती हैं।

10. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् All India Councile for Technical Education (AICTE)

शिक्षा के मानवीयकरण का विशेष प्रयास मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद के आधार पर अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्

11. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मूल्य–शिक्षा कार्यक्रम गतिविधियां

देश के नौ राज्यों– उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़, गुजरात, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, उत्तरांचल में 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' चेतना विकास मूल्य–शिक्षा आधारित शिविरों का आयोजन वर्तमान में भी किया जा रहा है। 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित प्राथमिक स्तर पर विद्यालय भी प्रारंभ किया जा चुका है। रायपरु, छत्तीसगढ़ में अभ्युदय संस्थान के पारिवारिक प्रयास से अभिभावक विद्यालय 2011 में खोला गया है, जहां कक्षा एक से कक्षा छः तक की कक्षाएं लगाई जा रही हैं। अभिभावक विद्यालय में पढ़ाने के लिए 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित पाठ्यक्रम तैयार कर लिए गए है एवं आगे और तैयार किया जा रहा है। भारत के बाहर भूटान, ''कनाडा'', लंदन में 'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित मूल्य–शिक्षा कार्यशालाएं आयोजित की जा रही हैं। भूटान में यह मूल्य–शिक्षा वहां की शिक्षा–व्यवस्था में अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जा रहा है एवं

अन्य अंतर्राष्ट्रीय देशों में इसे शिक्षा में अनिवार्य विषय के रूप में लागू करने की योजनाएं चल रही हैं।

'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' आधारित मूल्य–शिक्षा को वर्तमान शिक्षा परंपरा में विश्वस्तर पर अनिवार्य विषय के रूप में लाया गया और इस प्रयास हेतु भारत एवं भारत के बाहर से सभी देशों के बीच विचार–मंथन हेतु अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की परंपरा प्रारंभ की गई है, जिसमें प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 6–8 जनवरी, 2012 आई. आई. आई. टी. हैदराबाद में आयोजित किया गया ।

मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद के शोध अध्ययन हेतु कार्यरत् संस्थाएं :–

मानवीय शिक्षा शोध संस्थान ,अभ्युदय संस्थान, अछोटी, दुर्ग (छ.ग.)

मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा के अध्ययन के लिए समर्पित मानवीय शिक्षा शोध संस्थान ,अभ्युदय संस्थान, अछोटी, दुर्ग (छ.ग.) में जो कि सन् 2000 से छत्तीसगढ़ में संचालित है। अभ्युदय संस्थान के सभी सदस्य मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद का परिचय व अध्यापन उपकार विधि बिना किसी आर्थिक अपेक्षा से कराते हैं। इस दर्शन को विधिवत व गहराई से समझने के लिए देश के विभिन्न राज्यों से जिज्ञासु व समझने के इच्छुक प्रतिभागी सहभागी होते है। दर्शन की सूचना व इसके अभ्यास के उपरान्त प्रतिभागी अपने विचार, व्यवहार व कार्य में मानव सहज व प्रकृति सहज आवश्यक सकारात्मक परिवर्तन को महसूस कर पाते है। अध्ययन सत्र के समापन में सभी प्रतिभागी अपने अध्ययन/प्रशिक्षण से प्राप्त समझ/ज्ञान तथा विचारों में आये परिवर्तन को स्वमूल्यांकन विधि से मौखिक रूप से प्रस्तुत करते हैं। कुछ प्रतिभागी लिखित प्रतिपुष्ठि (फीडबैक) भी देते हैं। अनेक मत मतान्तरों से मुक्त मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद का पाठ्यवस्तु मानव सहज और प्रकृति सहज सार्वभौमिक नियमों की व्याख्या करता है। तथा साथ–साथ जीने का सूत्रपात इन नियमों के आधार पर होता है। इसी मंशा अनुरूप युनेस्को ने भी शिक्षा के चार स्तभों में Learning to live together अर्थात् ''साथ–साथ जीना सीखना'' पर प्रमुख जोर दिया है। मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा से मानव में निम्नलिखित सदगुणों की विकास सुनिश्चित होता हैं – स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा एवं व्यक्तित्व में संतुलन , व्यवहार में सामाजिक व्यवसाय में स्वावलम्बन व पर्यावरण के साथ संतुलन। अध्ययन के पश्चात पारंगत शिक्षकों एवं परिचय प्राप्त सभी वर्गो के लोगों ने मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद के विचार को नयी सही एवं उपयोगी बताया है। इसी क्रम में सन् 2010 से छत्तीसगढ़ राज्य शासन एतद् द्वारा स्कूल शिक्षा विभाग के अन्तर्गत चेतना

विकास मूल्य शिक्षा के स्थायित्व व निरंतरता के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एस.सी.ई.आर.टी.) रायपुर में चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ की स्थापना की गई। जिसके माध्यम व अभ्युदय संस्थान के सहयोग से राज्य के विभिन्न जिलों के विद्यालयों में पदस्थ शिक्षक–शिक्षिकाओं को श्रद्धेय ए. नागराज द्वारा प्रतिपादित मध्यस्थ दर्शन के विभिन्न निम्न वांगमयो का अभ्युदय संस्थान में विधिवत् अध्ययन कराया जाता है। जो इस प्रकार है – जीवन विद्या एक परिचय, परिभाषा संहिता, मानव व्यवहार दर्शन, मानव अनुभव दर्शन, मानव कर्म दर्शन, समाधानात्मक भौतिकवाद , अभ्यास दर्शन, व्यवहारात्मक जनवाद, अनुभवात्मक अध्यात्मवाद, व्यवहारवादी समाजशास्त्र, आवर्तनशील अर्थशास्त्र, मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान, जीवन विद्या अध्ययन बिन्दु, मानवीय संविधान का प्रारूप, संवाद भाग एक, संवाद भाग दो, दिव्य–पथ। इस दर्शन का अनुसंधान प्राकृतिक सार्वभौम नियमों पर आधारित है। जो सार्वकालिक व सार्वदेशीय भी है। इसके विधिवत अध्ययन अभ्यास से किसी भी व्यक्ति को मानव सहज प्राकृतिक नियमों का ज्ञान होने लगता है, जैसे व्यक्ति का समझ होता है इसी समझ के आधार पर विचार व मानसिकता का निर्माण होता है। विचार यदि सही है प्राकृतिक नियमों के अनुकुल है तो मनुष्य का कार्य व व्यवहार भी सही व प्राकृतिक नियमों के अनुकुल होगा। अध्ययन पश्चात् सभी शिक्षकगण अपने स्वमूल्यांकन में मौखिक प्रस्तुति के रूप में अपने समझ, विचार, व्यवहार व कार्य में हुए सकारात्मक परिवर्तन को प्रस्तुत करते हैं।

मानव तीर्थ, किरीतपुर, जिला – बेमेतरा

मध्यस्थ दर्शन ''सह –अस्तित्ववाद'' के प्रणेता श्रध्देय ए नागराज जी के मार्गदर्शन में इस दर्शन को गहराई से समझने इस पर शोध, अध्ययन और अभ्यास के लिए 2015 में छत्तीसगढ़ के बेमेतरा जिले के किरीतपुर ग्राम में खारून और शिवनाथ नदी के संगम में मानव तीर्थ, (मध्यस्थ– दर्शन '' सह –अस्तित्ववाद '' का अध्ययन–अभ्यास स्थली) का निर्माण, गॉधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, राजस्थान के सहयोग से किया गया। जहां गत 3 वर्ष से इस दर्शन को समझने और व्यक्तित्व और जीवन शैली में परिमार्जन हेतु इसका अभ्यास करने देश भर से जिज्ञासु और समझने के इच्छुक लोग आते है। जहां मानव तीर्थ में निवासरत परिवार समूह श्री साधन भट्टाचार्य , श्रीमति मौसमी, शुभा, श्रीराम –गौरी जी, देविका, अंकित–मृदु, आन्या,धर्मिन, राममिलन–गोदावरी व अन्य तथा देश के अन्य स्थानों में इस दर्शन में निष्ठा से लगे इसके प्रबोधकों के माध्यम से इसका अध्ययन उपकार विधि से बिना किसी आर्थिक अपेक्षा से कराया जाता है । जहॉ सर्व मानव लक्ष्य व्यक्ति में समाधान, परिवार में समृध्दि, समाज में अभय और प्रकृति व चारों अवस्थाओं में संतुलन के अर्थ में मानव मानसिकता का निर्माण अध्ययन अभ्यास प्रकिया के माध्यम से किया जाता है।

मानवीय शिक्षा संस्कार, संस्थान, मंधना, कानपुर

इस संस्थान की स्थापना सन 2000 में हुई । इसका मूल उद्देश्य मानवीय शिक्षा एवं संस्कार की प्रस्तावना सर्वजन तक पहुंचाना रहा, जिससे मानव, मानवीय चेतना में संक्रमित हो सके एवं परस्परता में मानवीय आचरण पूर्वक जीकर स्वशुभ व सर्व शुभ को देखने व सुनिश्चित करने में सफल हो सके । इसके लिए संस्थान में एवं संस्थान के द्वारा लोक शिक्षा एवं शिक्षा संस्कार योजना के अंतर्गत शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है। लोक शिक्षा के अंतर्गत जो भी परिवार व्यवस्था से मानवीय व्यवस्था में भागीदारी के लिए इच्छुक हैं, उनके साथ संस्थान में समाधान, सामाजिकता एवं स्वाबलंबन पूर्वक जीने के लिए अध्ययन अभ्यास भी किया जाता है। स्वाबलंबन के लिए मुख्यतः प्राकृतिक कृषि का अध्ययन एवं अभ्यास किया जा रहा है।

शिक्षा संस्कार योजना के अंतर्गत प्रचलित शिक्षा में (मुख्यतः उच्च शिक्षा में) मानवीय मूल्यों के समावेश के लिए प्रयास किया जा रहा है।

मानव चेतना विकास केन्द्र, इंदौर

मध्यस्थ दर्शन ''सह –अस्तित्ववाद'' के प्रणेता श्रध्देय ए नागराज जी के परिचय में आने के बाद इस दर्शन के विचार से प्रेरित होकर श्री अजय दायमा जी वर्षा दायमा जी और उनके परिवार ने वर्तमान प्रचलित शिक्षा व व्यवस्था के अधूरेपन को पहचानते हुए कि प्रचलित शिक्षा व व्यवस्था के माध्यम से मानवीय शिक्षा व व्यवस्था का ढाँचा खड़ा नहीं हो सकता इसके लिए वैकल्पिक विधि ही प्रस्तावित है इस अर्थ में 2008 से मानव चेतना विकास केन्द्र का निर्माण, ग्राम पिवडाय, इंदौर में हुआ जहॉ आज की शिक्षा, विचार, व्यवहार, कार्य, उत्पादन–विनिमय का विकल्प पर शोध और प्रयोग हो रहा है जहाँ 18 परिवार और 25 युवा भाई–बहन इस दर्शन को समझते हुए परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था के अर्थ में अध्ययन अभ्यास व सामाजिकता के प्रयोग में लगे हुए है। इस संबंध में देश के अन्य स्थानों से लोग यहॉ इस दर्शन से परिचय के लिए अध्ययन शिविर के लिए आते है। इस संस्थान के माध्यम से हजारों लोगों को इसका प्रारंभिक परिचय प्राप्त हुआ है।

उत्सवपारा,
सांकरी–जिला बालोद (छ.ग.)

मानवीय शिक्षा शोध संस्थान, अभ्युदय संस्थान, अछोटी से मध्यस्थ दर्शन ''सह–अस्तित्ववाद'' का अध्ययन किये हुए छत्तीसगढ़ शासन स्कुल शिक्षा विभाग में कार्यरत कुछ शिक्षक – शिक्षिकाओं के समूह और शासन के अन्य विभाग के लोकसेवक के साथ छत्तीसगढ़ ग्रामीण अंचलों में सक्रिय शुभचिंतक परिवार मिलकर इस दर्शन के व्यवहारिक अभ्यास हेतु

परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्थ के अर्थ में उत्सवपारा जो सांकरी ग्राम का एक मोहल्ला अर्थात् गुणवता पूर्ण जिंदगी की प्रयोगशाला के स्वरूप में होने जा रहा है। इसका निर्माण ग्राम सांकरी, गुंडरदेही जिला बालोद (छ.ग.) में किया जा रहा है।
जिसमें श्रध्देय ए नागराज जी द्वारा प्रस्तुत मानवीयतापूर्ण आचरण का अनुकरण अनुसरण पूर्वकःशिक्षा व व्यवस्था के माडल के लिए प्रयास किया जा रहा है।

'मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद' के प्रकाश में चेतना विकास मूल्य–शिक्षा पृथक् पाठ्यक्रम के रूप में आज निम्न स्थानों पर पढ़ाई जा रही है–

- मानवीय शिक्षा शोध संस्थान केन्द्र, अभ्युदय संस्थान, अछोटी दुर्ग
- अभिभावक विद्यालय वी.आई.पी. माना रोड़ रायपुर,
- एन.आई.टी. रायपुर, छत्तीसगढ़
- इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़
- एस.सी.ई.आर.टी. शंकर नगर रायपुर छत्तीसगढ़
- स्वामी विवेकानन्द तकनीकी विश्वविद्यालय, रायपुर छत्तीसगढ
- कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर छत्तीसगढ़
- समाधान महाविद्यालय, बेमेतरा छत्तीसगढ़
- आई. आई. आई. टी. हैदराबाद, आंध्र प्रदेश के 17 विश्वविद्यालयों में
- कृष्णा विश्वविद्यालय, मछलीपट्टनम, आन्ध्र प्रदेश
- जवाहरलाल नेहरू तकनीकी महाविद्यालय, आंध्र प्रदेश
- मानवीय शिक्षा संस्कार संस्थान, कानपुर उत्तर प्रदेश
- आई.आई.टी. कानपुर एवं एच.बी.टी. आई. कानपुर उत्तर प्रदेश
- अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
- अभ्युदय संस्थान, हापुड़ उत्तर प्रदेश
- महामाया तकनीकी विश्वविद्यालय, नोयड़ा उत्तर प्रदेश
- जीवन विद्या प्रतिष्ठान, बिजनौर, उत्तर प्रदेश
- आई.आई.टी. दिल्ली
- गलगोटिया विश्वविद्यालय नोयडा, दिल्ली
- मूल्य–शिक्षा प्रकोष्ठ, एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली, सरकार
- आई.के.जी. पंजाब तकनीकी विश्वविद्यालय, जालन्धर

- आई.आई.टी. बी.एच.यू. बनारस
- रॉयल विश्वविद्यालय भूटान, थिम्पू
- जवाहरलाल नेहरू कृषि महाविद्यालय, मध्य प्रदेश
- जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, मध्यप्रदेश
- दिव्यपथ संस्थान अमरकंटक, मध्य प्रदेश
- मानव चेतना विकास, केंद्र इंदौर, मध्य प्रदेश
- आई.आई.टी. मद्रास
- हिमाचल प्रदेश तकनीकी महाविद्यालय, हमीरपुर
- AGI आत्मीय ग्रूप ऑफ इंस्टिट्यूशन, राजकोट, गुजरात
- उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, मान्य विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, राजस्थान
- सोमैया विद्या विहार, मुंबई, महाराष्ट्र
- मूल्य–शिक्षा प्रकोष्ठ, एस.सी.ई.आर.टी. यवतमाल एवं बुलढाणा, महाराष्ट्र